Published Date:	6 Jul 2026	Publication:	Business Standard (Hindi) [New Delhi]
Journalist:	Abhishek Kumar	Page No:	3
Circulation:	3,217		

सवाल जवाब

शेयरों में वृद्धि के लिए कमाई में निरंतर बढ़ोतरी जरूरी : राहुल सिंह

टाटा ऐसेट मैनेजमेंट में इक्विटीज के मुख्य निवेश अधिकारी (सीआईओ) राहुल सिंह का कहना है कि भूराजनीतिक तनाव कम होने से भारतीय शेयर बाजारों को बढ़ावा मिला है, लेकिन बाजार की अगली चाल इस बात पर निर्भर करेगी कि कंपनियां कमाई की उम्मीदों पर कितनी खरी उतरती हैं। अभिषेक कुमार के साथ ईमेल बातचीत में सिंह ने कहा कि अगर कमोडिटी की कीमतें और कम होती हैं और आपूर्ति श्रृंखला सामान्य रहती है, तो वित्त वर्ष 2027 में निफ्टी 50 की कमाई में बढ़ोतरी लगभग 15 प्रतिशत तक पहुंच सकती है। उनसे बातचीत के अंश:



पश्चिम एशिया में तनाव को लेकर चिंताएं कम होने से बाजार में सुधार आ रहा है। लेकिन क्या मौजूदा मूल्यांकन और कमाई में बढ़ोतरी की उम्मीदों को देखते हुए अब बाजारों के आगे बढ़ने की काफी गुंजाइश है?

भू-राजनीतिक तनाव कम होने से बाजार धारणा बेहतर हुई है। इससे कॉरपोरेट लाभ और डॉलर/रुपये विनिमय दर जैसे प्रमुख आर्थिक कारकों पर पड़ने वाले नकारात्मक जोखिम कम हुए हैं। लेकिन अब बाजार से मिलने वाला रिटर्न मुख्य रूप से आय बढ़ोतरी से तय होगा, न कि मूल्यांकन में और बढ़ोतरी से, क्योंकि भारतीय इक्विटी बाजार अभी भी काफी महंगे हैं। अगर कमोडिटी की कीमतें कम होती रहीं और आपूर्ति श्रृंखला और ज्यादा बेहतर होती गई, तो चालू वित्त वर्ष के लिए निफ्टी की आय में लगभग 15 प्रतिशत की बढ़ोतरी का ब्लूमबर्ग का अनुमान हासिल हो सकता है। इससे बाजार में धीरे-धीरे सुधार के लिए मजबूत आधार मिलेगा। एआई से जुड़ी चिंताएं अभी भी बनी हुई हैं, चाहे वह भारत के आबादी लाभ पर इसके संभावित लंबे समय के असर की बात हो या वैश्विक पूंजी प्रवाह पर इसके प्रभाव की। ऐसे माहौल में, कमाई में बेहतर बढ़ोतरी दिखाने वाली कंपनियों और सेक्टरों को अधिक मूल्यांकन मिलने की संभावना है।

आने वाले महीनों में इक्विटी बाजार को कौन-सी चीजें चला सकती हैं?

आने वाले महीनों में इक्विटी बाजार के लिए कॉरपोरेट आय ही सबसे बड़ा कारण रहेगी। बेहतर होते आर्थिक परिवेश, घटते भूराजनीतिक जोखिम, कमोडिटी की नरम कीमतों और स्थिर बॉन्ड यील्ड से मदद मिलेगी। घरेलू स्तर पर निवेश चक्र, बेहतर ऋण वृद्धि, विनिर्माण को मिल रहा समर्थन और बैंकिंग सिस्टम में परिसंपत्ति की अच्छी गुणवत्ता मध्यावधि परिदृश्य को मजबूती देती रहेगी। साथ ही, वैश्विक पूंजी प्रवाह, एआई-आधारित निवेश और कच्चे तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव बाजार धारणा को प्रभावित करने वाले अहम कारक बने रहेंगे।

बाजार की तेजी के अगले दौर में कौन से सेक्टर सबसे अच्छी स्थिति में हैं? क्या कोई ऐसे सेक्टर हैं जिन्हें लेकर आप सतर्क हैं?

हम बैंकिंग, स्वास्थ्य सेवा, बिजली और संसाधन व ऊर्जा क्षेत्र को प्राथमिकता देना जारी रखेंगे। बैंकिंग को बेहतर स्थिति में माना जा रहा है, क्योंकि ऋण वृद्धि में सुधार और ब्याज दर चक्र में बदलाव समय के साथ आय में मदद करेगा। इससे मौजूदा मूल्यांकन पर लाभ कमाना अनुकूल बना रहेगा। स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र मजबूत मांग और उचित मूल्यांकन के कारण आकर्षक दीर्घावधि ढांचागत अवसर बना हुआ है। ऊर्जा में बिजली की बढ़ती मांग, पारंपरिक और नवीकरणीय बिजली उत्पादन दोनों में जारी निवेश, पारेषण संबंधी पूंजीगत खर्च और ऊर्जा सुरक्षा पर बढ़ते फोकस से अवसर पैदा हो रहे हैं। दूसरी ओर, हम अल्पावधि में आईटी को लेकर थोड़े सतर्क हैं।

इस समय इक्विटी बाजार के सामने कौन-से बड़े जोखिम हैं?

सबसे बड़े जोखिम अभी भी बाहरी हैं। भूराजनीतिक घटनाक्रम, कच्चे तेल और दूसरी कमोडिटी की कीमतों में उतार-चढ़ाव और वैश्विक व्यापार नीतियों में बदलाव जैसी चीजों पर नजर रखना जरूरी है। इसके अलावा, वैश्विक पूंजी आवंटन और नौकरी सृजन पर एआई के असर का भारत में बड़ा असर पड़ेगा। और अंत में, बाजार का प्रदर्शन इस बात पर ही निर्भर करेगा कि कंपनियों की कमाई उम्मीदों के मुताबिक होती है या नहीं।

जून तिमाही के नतीजों के सीजन से आपको क्या उम्मीदें हैं?

नतीजों का सीजन यह तय करने के लिए अहम होगा कि बाजार की धारणा में हाल में आए सुधार फंडामेंटल पर आधारित हैं या नहीं।